

रॉबर्ट वानॉय , बाइबिल की भविष्यवाणी की नींव, व्याख्यान 10

पैगंबर और पंथ , क्या पैगंबर लेखक थे?

ए. भविष्यवक्ताओं ने पंथ की समीक्षा का विरोध किया

हम इस विचार के समर्थन के लिए पवित्रशास्त्र और विचारों को देख रहे थे कि पैगंबर मूल रूप से पंथ के विरोधी थे। हमने यशायाह, अमोस, होशे, मीका, यिर्मयाह में कुछ ग्रंथों का संदर्भ दिया, और मैं कह सकता हूँ, भविष्यवक्ताओं द्वारा दिए गए कुछ बयान बहुत शक्तिशाली बयान थे और पंथ की कड़ी निंदा थे। फिर क्या आप इस निष्कर्ष पर पहुँचेंगे कि भविष्यवक्ता मूल रूप से पंथ के विरोधी थे, मुझे लगता है कि यह एक और सवाल है। लेकिन कोई इस बात से इनकार नहीं कर सकता कि इज़राइल में सांस्कृतिक अनुष्ठान के बारे में कुछ मजबूत नकारात्मक बयान हैं जो कई भविष्यवाणी पुस्तकों में पाए गए थे।

1. कुछ कथन पंथ का विरोध नहीं करते

एक। यशायाह

हालाँकि, आपको तुरंत इस बात से अवगत होना होगा कि भविष्यवक्ताओं की कुछ घोषणाएँ भी हैं जिनमें वे मूल रूप से पंथ के विरोध में नहीं दिखते हैं; वे पंथ-विहीन धर्म के प्रवर्तक नहीं थे जैसा कि कुछ लोगों ने आरोप लगाया है। यशायाह, जैसा कि हमने अध्याय 1:11-17 में देखा, यरूशलेम में बलिदानों के संबंध में जो कुछ चल रहा था, उसके विरुद्ध बहुत दृढ़ता से बोलता है। वह अपनी भविष्यवाणी में यह भी घोषणा करता है कि मंदिर यहोवा का घर है। वह सियोन पर्वत पर प्रभु के निवास की बात करता है। उनके लिए मंदिर भगवान की विशेष उपस्थिति का स्थान है। वह मंदिर में सिंहासन पर बैठे हुए, ऊँचे और ऊपर उठे हुए भगवान के उस दर्शन को देखता है। इसलिए, ऐसा नहीं लगता कि वह मूल रूप से पंथ के विरोधी हैं।

बी। यिर्मयाह

इसी तरह, यिर्मयाह 7:10, 32:34, 34:15, और कई अन्य स्थानों में प्रभु के नाम पर बोलते हुए, यिर्मयाह बार-बार मंदिर को "वह घर जो मेरे नाम से बुलाया जाता है" कहता है। यिर्मयाह

17:26 में, यिर्मयाह कहता है, "यहूदा के नगरों और यरूशलेम के आस-पास के गांवों से, बिन्यामीन के क्षेत्र और पश्चिमी तलहटी से, पहाड़ी देश और नेगेव से लोग होमबलि और बलिदान, अन्नबलि लेकर आएंगे।", धूप, और यहोवा को धन्यवाद भेंट।" वह इसके बारे में बहुत सकारात्मक तरीके से बात करते हैं। 2 शमूएल 24:18 में परमेश्वर ने दाऊद को एक वेदी बनाने का निर्देश दिया, "उस दिन, गाद भविष्यद्वक्ता दाऊद के पास गया और उस से कहा, 'जाओ, और यबूसी अरौना के खलिहान पर यहोवा के लिये एक वेदी बनाओ।' इसलिये दाऊद ऊपर गया, जैसा यहोवा ने उसे आज्ञा दी थी। तो, यहाँ 2 शमूएल 24:18 में एक भविष्यवक्ता डेविड को एक वेदी बनाने के लिए कह रहा है। यिर्मयाह 27:18 में - यह दिलचस्प है, यिर्मयाह के पास वे उपदेश थे जहां उसने कहा था कि भगवान मंदिर को नष्ट करने जा रहे थे - लेकिन यिर्मयाह 27:18 को देखें, "सर्वशक्तिमान भगवान से विनती करें कि भगवान के घर में बचा हुआ सामान और यहूदा के राजा के भवन में और यरूशलेम में बाबुल को न ले जाया जाए।" वह मंदिर के संरक्षण के लिए प्रार्थना कर रहे हैं। इसलिए भविष्यवाणियों की पुस्तकों में बहुत सारी अभिव्यक्तियाँ बिखरी हुई हैं जिनमें यह स्पष्ट है कि भविष्यवक्ता इस अर्थ में पंथ-विरोधी नहीं थे कि वे पंथ के बिना एक धर्म चाहते थे। उनके पास मंदिर और मंदिर की पूजा के बारे में कहने के लिए सकारात्मक बातें थीं।

सी। क्या ओटी में

कोई पंथविहीन धर्म है? वास्तव में, मुझे ऐसा लगता है कि पंथ के बिना धर्म का विचार एक अजीब विचार है। निश्चित रूप से यह पवित्रशास्त्र के आंकड़ों के विपरीत है। पेंटाटेच के विशाल खंड उन नियमों का वर्णन करने के लिए दिए गए हैं जो भगवान ने मूसा के माध्यम से इज़राइल को बलिदान और प्रसाद लाने के लिए दिए थे। यह सब कुछ बहुत बाद के समय का बताकर और यह कहकर कि यह मोज़ेक नहीं है और डेटा का हिस्सा नहीं है, आप कहते हैं कि बाइबल को बलिदान की आवश्यकता नहीं है।

इसके अलावा, आप पूछ सकते हैं कि पंथ के बिना धर्म क्या है? क्या नैतिकता ही एकमात्र धर्म है? यह एक दार्शनिक प्रश्न बन जाता है। कई एंग्लिकन इस दृष्टिकोण को स्वीकार करते हैं कि पैगंबर मूल रूप से पंथ के विरोधी थे, और पैगंबरों को केवल नैतिकता के प्रचारक के रूप में देखते

हैं। लेकिन वह धर्म को नैतिकता तक सीमित कर देता है। एक अर्थ में, जहां तक सच्चे बाइबिल धर्म का सवाल है, नैतिकता वास्तव में सच्चे धर्म का विनाशक है। मुझे लगता है कि आप यह तर्क दे सकते हैं कि पंथ के बिना सच्चा धर्म वास्तव में अस्तित्व में नहीं है।

घ) ईसाई धर्म और पंथ

नए नियम के युग के हमारे अपने संदर्भ में, निश्चित रूप से ईसाई धर्म पंथ के बिना मौजूद नहीं हो सकता है। प्रार्थना के बिना, प्रसाद के बिना और धार्मिक सभा के बिना धर्म कैसा है? मैं अपने सार में सोचता हूं, सच्चा धर्म ईश्वर के साथ संगति है, और यदि ऐसा है तो इसे केवल नैतिक कार्यों में नहीं, बल्कि धार्मिक कार्यों में भी व्यक्त होना चाहिए। इससे क्षैतिज और ऊर्ध्वाधर संबंध का प्रश्न उठता है। हाँ, सच्चे धर्म की आवश्यकता है कि हम अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम करें, कि हम क्षैतिज स्तर पर अन्याय के विरुद्ध उपदेश दें। लेकिन सच्चे धर्म के लिए यह भी आवश्यक है कि हम ईश्वर के साथ संगति रखें और ईश्वर के साथ एक रिश्ता रखें जो प्रार्थना, स्तुति, संगति और अभिषेक आदि में खुद को व्यक्त करता है। ऐसी अभिव्यक्तियाँ केवल व्यक्तिगत और निजी नहीं हैं। उन्हें सांप्रदायिक और सार्वजनिक होना चाहिए, यह निश्चित रूप से पवित्रशास्त्र की स्पष्ट शिक्षा है।

1. पेंटाटेच में निर्धारित पंथ

इसलिए, मुझे यह कहना बाइबिल, विशेष रूप से पेंटाटेच और सच्चे धर्म की प्रकृति, दोनों के लिए विरोधाभासी लगता है कि एक समय था जब इज़राइल का धर्म पंथ-विहीन था। वास्तव में, लैव्यिकस हमें बताता है कि पंथ अपने लोगों के लिए ईश्वर का एक उपहार था। लैव्यव्यवस्था 17:11 में देखें, “क्योंकि प्राणी का प्राण लोह में है, और मैं ने उसे तुम को वेदी पर प्रायश्चित्त करने को दिया है; यह वह खून है जो किसी के जीवन का प्रायश्चित्त करता है।” पुराने नियम काल के इस बलिदान में रक्त बहाया गया था। और परमेश्वर कहते हैं, “मैंने वह तुम्हें वेदी पर दिया है, क्योंकि यह वह लहू है जो प्रायश्चित्त करता है।” इसलिए यदि आप पुराने नियम को उसी रूप में लेते हैं जैसे वह स्वयं प्रस्तुत करता है, तो निश्चित रूप से आप यह निष्कर्ष नहीं निकाल सकते हैं कि सांस्कृतिक अनुष्ठान कनानियों से ली गई बुतपरस्त प्रथाओं का मिश्रण थे। पुराने नियम में कहा गया है कि ये नियम ईश्वर

द्वारा मूसा के माध्यम से इज़राइल को दिए गए थे। उन्हें पाप के प्रायश्चित के साधन के रूप में दिया गया था जो अंततः मसीह के बलिदान कार्य की ओर इशारा करता था, जो मेमना है जो दुनिया की नींव से मारा गया था। इसलिए मुझे लगता है कि जब आपको पूरी तस्वीर मिल जाएगी। यह अकल्पनीय है कि भविष्यवक्ता मूल रूप से पंथ के विरोधी रहे होंगे। यह पूरे पुराने नियम के रहस्योद्घाटन के साथ पूरी तरह से असंगत है।

2. भविष्यवक्ताओं ने पंथ में बुतपरस्ती की निंदा की: ओपस ऑपरेटम

भविष्यवक्ताओं ने जिस चीज की निंदा की, वह इजरायली पंथ में प्रवेश करने वाली बुतपरस्तताएं थीं जहां यहोवा की पूजा की जाने लगी, बाल या किसी अन्य बुतपरस्त देवता की तरह, साथ ही अनुष्ठान प्रणाली का एक औपचारिक यांत्रिक विचार भी। एक लैटिन वाक्यांश है जो अक्सर उस *ओपस ऑपरेटम* के लिए उपयोग किया जाता है, जिसका अर्थ है "काम से यह काम किया जाता है।" दूसरे शब्दों में, आप अनुष्ठान से गुजरते हैं और यह स्वचालित रूप से वांछित परिणाम उत्पन्न करता है। वे बस इन धार्मिक अनुष्ठानों से गुजरेंगे और सोचेंगे कि केवल इसके द्वारा ही उन्हें भगवान का एक निश्चित अनुग्रह प्राप्त हुआ है। फिर वे अपनी इच्छानुसार अपना जीवन जिएंगे।

क) होशे और हीथेन सांस्कृतिक प्रथाएँ

होशे के समय में, आप होशे की पुस्तक पर काम कर रहे हैं, और मुझे लगता है कि आप इससे अवगत हैं, बाल पूजा उत्तरी साम्राज्य में प्रचलित थी। होशे 2:5 और 8 में भूमि का फल बाल को बताया गया था। लोगों ने मंदिर वेश्यावृत्ति सहित कई अन्यजातियों की प्रथाओं का पालन किया, जो कि होशे 4:11 और निम्नलिखित में है। वे ये सब काम कर रहे थे, फिर भी अपने बलिदान यहोवा के पास ला रहे थे। यही कारण है कि होशे पंथ के विरुद्ध बोलता है। उन्होंने होशे 8:4-6 में मूर्तियाँ बनाई हैं। होशे 10:1 में उनके पास पवित्र स्तंभ थे, लेकिन वे अभी भी यहोवा के अनुष्ठानों से गुजर रहे हैं। यह स्पष्ट प्रतीत होता है कि उनके मन में, इस्राएलियों के मन में, यह था कि बाहरी रूप में सुरक्षा थी, बस इन रूपों से गुजरते हुए, बस यही उनके लिए आवश्यक था। जबकि होशे को एहसास है कि इस तरह का सांस्कृतिक अनुष्ठान बिल्कुल बेकार है। यह प्रभु के लिए घृणित है।

भगवान ने और मांगा. जैसा कि वह होशे 6:6 में कहता है, "मैं बलिदान नहीं, दया चाहता हूँ, होमबलि से अधिक परमेश्वर का ज्ञान चाहता हूँ।"

ख) खाली अनुष्ठानों पर प्रतिबंध लगाएं

यदि आप यशायाह 1 पर वापस जाएं तो लोग अपने बलिदान श्लोक 11 ला रहे हैं, वे उनमें से बहुत से ला रहे हैं और प्रभु कहते हैं, "वे मेरे लिए क्या हैं?" ऐसा वह श्लोक 15 के अंत में कहता है, "तुम्हारे हाथ खून से भरे हुए हैं।" आप ऐसा जीवन नहीं जी रहे हैं जो ईश्वर के प्रति किसी समर्पण या समर्पण को दर्शाता हो या प्रभु के मार्गों पर चलने की इच्छा को दर्शाता हो, आप बस इन अनुष्ठानों से गुजर रहे हैं। इसलिए वे भगवान से दूर हो गए, वे बस रूपों के माध्यम से जा रहे हैं, और भगवान कहते हैं कि यह घृणित है।

3. आमोस 5:21-25 और पंथ

अब, मुझे लगता है कि दो मार्ग जो संभवतः सबसे कठिन हैं वे अमोस 5 और जेरेमिया 7 हैं, जिन्हें हमने ब्रेक से पहले देखा था। आमोस 5:21-25 निश्चित रूप से वह है जिसकी अक्सर अपील की जाती है। विशेष रूप से श्लोक 25 का अलंकारिक प्रश्न। "हे इस्राएल के घराने, क्या तुम जंगल में 40 वर्ष तक मेरे लिये बलिदान और भेंट लाते रहे?" ऐसा लगता है कि प्रश्न "नहीं" के इच्छित उत्तर के साथ पूछा गया है। कुछ लोग इसका तात्पर्य यह समझते हैं कि इस्राएल पहले से ही जंगल की अवधि में अवज्ञाकारी था और जंगल की अवधि के दौरान प्रभु के लिए बलिदान नहीं लाता था।

ए) मैककोमिस्की

यदि आप अपने उद्धरणों, पृष्ठ 12 को देखें, तो वहां *एक्सपोज़िटर्स बाइबिल कमेंटरी* में अमोस पर टॉम मैककोमिस्की की टिप्पणी से कुछ पैराग्राफ हैं, जहां वह कहते हैं, "खंड 25 और 26 कठिन हैं। कई टिप्पणीकारों का मानना है कि खंड 25 के प्रश्न के नकारात्मक उत्तर की अपेक्षा के कारण, अमोस इस बात की पुष्टि कर रहा था कि जंगल की अवधि के दौरान बलिदान अज्ञात था, या कि इसे यहोवा के साथ उचित संबंध के लिए आवश्यक नहीं माना गया था, आज्ञाकारिता ही एकमात्र आवश्यकता थी। लेकिन यह व्याख्या वीवी की निरंतरता के साथ न्याय नहीं करती है। 25-26 को हिब्रू कण *वाव* (एनआईवी में अनुवादित) द्वारा बुलाया गया है जो श्लोक 26 से शुरू होता है।

एनआईवी 26 के अनुवाद में एक *वाव से शुरू नहीं होता है*; वहां कोई "और" या "लेकिन" नहीं है, यह सिर्फ इतना कहता है, "आपने अपने राजा के मंदिर को ऊपर उठाया।" "न ही यह पर्याप्त रूप से समझाता है कि बलिदान की प्रभावकारिता से इनकार करने वाला एक बयान दैवज्ञ के निर्णय अनुभाग में क्यों रखा गया था। प्रश्न (पद्य 25 का) एक नकारात्मक उत्तर की मांग करता है: "नहीं," तब इस्राएलियों ने बलिदान नहीं दिया था। जाहिर तौर पर चालीस साल की अवधि एक ऐसा समय था जब प्रभु की आज्ञाकारिता या लेवीय संस्थाओं के प्रति आज्ञाकारिता में गिरावट आई थी। यह अवधि कादेश में इस्राएलियों के दलबदल के साथ शुरू हुई। भविष्यवाणी परंपरा में इस जंगल काल में मूर्तिपूजा की ओर झुकाव पर जोर दिया गया है। इसलिए, जैसा कि मैककोमिस्की इस अनुच्छेद को पढ़ता है, वह कह रहा है कि श्लोक 25 एक अलंकारिक प्रश्न है - इसका उत्तर "नहीं" है, क्योंकि इज़राइल ने जंगल की अवधि

के दौरान बलिदानों का पालन नहीं किया, लेकिन उन्होंने कुछ और किया। वह उस *कानून का अनुवाद* श्लोक 26 को एक *कानून* प्रतिकूल के रूप में प्रस्तुत करता है; उनकी अगली पंक्ति पद 26 है जो सबसे अच्छी तरह से प्रतिकूल समझे जाने वाले शब्द से शुरू होती है, "परन्तु तू ने अपने राजा के मन्दिर को, और अपनी मूरतों के भवन को ऊंचा कर दिया है।" इसलिए इस्राएल ने बलिदान की उपेक्षा करके परमेश्वर की अवज्ञा की और मूर्तिपूजा की ओर मुड़ गया। इसीलिए वह जंगल के समय का जिक्र करते हुए 25 और 26 पढ़ता है। "मंदिर" और "पीठ" शब्दों को बदलने की आवश्यकता नहीं है।

पद्य 26 की व्याख्या और अनुवाद कैसे करें, इस पर बहुत चर्चा हुई है। लेकिन उनका निष्कर्ष है, "कविता एक अज्ञात सूक्ष्म देवता की मूर्तिपूजा के उपकरणों को संदर्भित करती है। इस तरह से देखा जाए तो, श्लोक 26 औपचारिक संरचना में अच्छी तरह से फिट बैठता है, क्योंकि ईजेकील और होशे की तरह अमोस ने अपने इतिहास में भगवान के लोगों की अवज्ञा का पता लगाया है। तो मैककोमिस्की उस अलंकारिक प्रश्न को इसी तरह देखता है और निश्चित रूप से वह अलंकारिक प्रश्न वह है जिसके बारे में लोग कहते हैं कि इसका तात्पर्य पंथ-विहीन धर्म के प्रति नकारात्मक उत्तर है। खैर, मैककोमिस्की का कहना है कि वास्तव में इसका उद्देश्य पंथ-रहित धर्म

होना नहीं है क्योंकि इज़राइल जंगल काल में अवज्ञाकारी था और बलिदानों का पालन नहीं करता था और इसके बजाय मूर्तिपूजा की ओर मुड़ गया था।

बी। अमोस 5 पर

रिडरबोस यहाँ एक डच पुराने नियम के विद्वान जे . रिडरबोस हैं जिन्होंने अमोस पर एक टिप्पणी लिखी है और मैककॉमिस्की जैसी व्याख्या पर सवाल उठाते हैं और पूछते हैं कि क्या यह वास्तव में श्लोक 25 और 26 के बारे में जाने का सबसे अच्छा तरीका है। रिडरबोस की अमोस 5 की चर्चा में उन्होंने सुझाव दिया है पिछले संदर्भ में मुद्दा भगवान द्वारा वर्तमान में लाए गए प्रसाद को अस्वीकार करने का है। अमोस 5:21 पर वापस जाएँ, “मैं तुम्हारे धार्मिक पर्वों से घृणा करता हूँ, मैं उनका तिरस्कार करता हूँ। चाहे तुम मेरे लिये होमबलि लाओ, तौभी मैं उन्हें ग्रहण न करूंगा।” मुद्दा वर्तमान में प्रसाद लाने का था और उनका मानना है कि यह तर्क देना कठिन है कि भगवान वर्तमान प्रसाद को इस आधार पर अस्वीकार कर देंगे कि उन्होंने जंगल के समय में प्रसाद लाने की उपेक्षा की थी। श्लोक 21 और 22 और श्लोक 25 में स्पष्ट रूप से क्या संबोधित किया जा रहा है, के बीच क्या संबंध है? उनका सुझाव यह है कि 25 वास्तव में 22 के विचार को इस अर्थ में जारी रखता है कि बलिदान लाना प्राथमिक और एकमात्र चीज नहीं है जिसे प्रभु इसराइल से चाहते हैं। यदि आप पेंटाटेच को देखें, तो ऐसा लगता है कि बलि प्रणाली जंगल काल में स्थापित की गई थी, और इज़राइल ने, कम से कम आंशिक रूप से, जंगल की यात्राओं के दौरान अनुष्ठान प्रणाली का पालन किया था। संख्या 16:46 में, वेदी की आग का उल्लेख किया गया है, और यह माना जाता है कि दैनिक बलिदान लाए जा रहे थे, लेकिन संख्या 16:46 के अलावा, आपको जंगल में भटकने के दौरान बलि प्रणाली के पालन का कोई स्पष्ट संदर्भ नहीं मिलता है।

लेकिन रिडरबोस का मानना है कि "निःसंदेह प्रसाद लाया गया था, लेकिन जिन परिस्थितियों में इस्राएली रह रहे थे, उनके कारण जंगल की अवधि के दौरान संभवतः सभी बलि प्रणाली का पूर्ण और नियमित पालन नहीं हुआ था।" तो उनका सुझाव यह है कि श्लोक 25 में उस अलंकारिक प्रश्न का उद्देश्य जितना प्रतीत हो सकता है उससे कम निरपेक्ष है। वह यह सुझाव नहीं दे रहा है कि जंगल में जो कुछ भी लाया गया था, वह कोई बलिदान नहीं था, बल्कि यह कि उस जंगल के समय

में बहुत कमी थी।

फिर, अमोस जिस तर्क पर आगे बढ़ रहा है वह यह है कि बलिदानों का उतना महत्व नहीं है जितना इस्राएली उन्हें दे रहे थे - अर्थात्, अनुष्ठान का पालन स्वयं सच्चे धर्म का सार था। “क्या तुम जंगल में मेरे लिये बलिदान लाए हो?” सम्पूर्ण अनुष्ठान व्यवस्था का पूर्णतः पालन नहीं किया गया। बलिदान सच्चे धर्म का सार नहीं है। सच्चा धर्म भगवान के प्रति आज्ञाकारी होने की दिल की इच्छा है। यह 1 शमूएल 15 के कथन पर वापस जाता है, "आज्ञापालन बलिदान से बेहतर है;" प्रभु यही चाहते हैं। इसलिए, चाहे आप मैककोमिस्की का दृष्टिकोण लें या रिडरबोस जैसा दृष्टिकोण, निश्चित रूप से श्लोक 25 जो कह रहा है वह यह नहीं है कि मोज़ेक धर्म जानबूझकर पंथ-विहीन था या सच्चा धर्म केवल नैतिकता का मामला है।

4. जेर 7:21-23 और पंथ

दूसरा पाठ जो मुझे कठिन लगता है वह है यिर्मयाह 7:21-23। कुछ लोगों ने तर्क दिया है कि इस पंथ-विरोधी दृष्टिकोण से यह सबसे महत्वपूर्ण मार्ग है, क्योंकि श्लोक 22 में, आपका कथन है, "जब मैं तुम्हारे पूर्वजों को मिस्र से बाहर लाया और उनसे बात की, तो मैंने उन्हें होमबलि के बारे में आदेश नहीं दिया। और बलिदान।" हम उस कथन के साथ क्या करें?

एक। निर्गमन 19:5

के साथ रॉल्स प्रतिक्रिया दो सुझाव हैं जो मैं दे सकता हूँ। एक रॉल्स का है, जो कहता है, "अनुबंध की पेशकश के साथ इसराइल के लिए यहोवा का सबसे पहला आगमन, " जो कि निर्गमन 19 में है, "डेकालॉग के प्रख्यापित होने से पहले भी, यह यहोवा के सबसे पहले एक साथ आने पर था" और इज़राइल भगवान ने बलिदानों के बारे में कुछ भी कहने से परहेज किया, बस इतना कहा कि लोगों और उनके बीच पूरा समझौता उनकी वफादारी और आज्ञाकारिता पर आधारित था। देखिए वह निर्गमन 19:5 है। “अब यदि तू पूरी रीति से मेरी आज्ञा माने, और मेरी वाचा का पालन करे, तो सब जातियों में से तू ही मेरी निज सम्पत्ति ठहरोगा। यद्यपि सारी पृथ्वी मेरी है, तौभी तुम याजकों का राज्य और पवित्र जाति ठहरोगे।' ये वे शब्द हैं जो तुम्हें इस्राएल से कहने हैं।” वाचा की वह पहली प्रस्तुति बलिदान के बारे में कुछ नहीं कहती है। तो, "जब मैं तुम्हारे पूर्वजों को मिस्र से

बाहर लाया और उनसे बात की, तो मैंने उन्हें होमबलि और बलिदान के बारे में आदेश नहीं दिया," उस प्रारंभिक प्रस्तुति को संदर्भित किया जा सकता है। तो यह एक तरीका है जिससे आप पद 21 से निपट सकते हैं।

बी। ओटी एलिस की प्रतिक्रिया: →के संबंध में

ओटी एलिस का एक अलग सुझाव है। मैंने आपके उद्धरणों में उसका उल्लेख किया है, पृष्ठ 11, "जिन चौंकाने वाले शब्दों पर हमने अभी विचार किया है उनका कारण लगभग समान रूप से आश्चर्यजनक शब्दों में दिया गया है: 'क्योंकि मैंने तुम्हारे पिता से कुछ नहीं कहा था, और न ही उन्हें उस दिन आज्ञा दी थी जब मैं उन्हें बाहर लाया था होमबलि या बलिदान के विषय में मिस्र की भूमि।' पहली नज़र में ये शब्द आलोचकों के इस दावे को पूरी तरह से पुष्ट करते प्रतीत होते हैं कि यिर्मयाह को निर्गमन के समय मूसा द्वारा शुरू की गई बलि प्रणाली के बारे में कुछ भी नहीं पता था। लेकिन ऐसा निष्कर्ष 'संबंधित' प्रस्तुत हिब्रू शब्द की अस्पष्टता के साथ न्याय करने में अंग्रेजी अनुवाद की विफलता पर आधारित है; और विशेष रूप से इस तथ्य से कि, जैसा कि उपयोग के अध्ययन से स्पष्ट हो गया है, उन्हें 'के कारण' या 'के लिए' द्वारा भी प्रस्तुत किया जा सकता है। यह स्पष्ट है कि यदि यिर्मयाह 7:22 में हम 'के कारण' या 'के लिए' मजबूत प्रतिपादन का उपयोग करते हैं, तो यह कविता न केवल उस अनुमान का समर्थन करना बंद कर देती है जिसे आलोचक इस पर आधारित करते हैं, बल्कि यह अत्यधिक उपयुक्त हो जाता है प्रसंग।" मुझे लगता है कि यहां एलिस के तर्क की ताकत उसका सुझाव है कि यह संदर्भ में कितनी अच्छी तरह फिट बैठता है। "यहोवा इस्राएल से यह नहीं कहता, कि उस ने उनके पूर्वजोंको बलिदान के विषय में कोई आज्ञा नहीं दी। पहले तो यिर्मयाह को सुनने वाले लोग सोच सकते थे कि यह उसका अर्थ था, लेकिन एक पल के प्रतिबिंब से उन्हें विश्वास हो जाएगा कि उसके शब्दों का सही अर्थ नहीं हो सकता है। यहोवा का मतलब यह था कि उसने बलिदानों के लिए उनके पूर्वजों से बात नहीं की, जैसे कि उसे उनकी ज़रूरत थी और वह तब तक भूखा रहेगा जब तक कि वह उन पापी मनुष्यों की घृणित भेंटों से तृप्त न हो जाए, जिन्हें उस वास्तविक संबंध का कोई अंदाज़ा नहीं था जिसमें वे खड़े थे। उसे।

भाषा जानबूझकर अस्पष्ट प्रतीत होती है, यहाँ तक कि आश्चर्यजनक रूप से भी। लेकिन ये

शब्द "अपनी होमबलि को अपने बलिदानों में रखो और तुम मांस खाओ" का उद्देश्य उनके अर्थ का संकेत देना है। आप देखिए, श्लोक 21 पर वापस जाएँ, "इस्राएल का परमेश्वर, सर्वशक्तिमान यहोवा यों कहता है, 'आगे बढ़ो, अपने होमबलि को अपने अन्य बलिदानों में शामिल करो और मांस स्वयं खाओ।'"

आप देख सकते हैं कि एलीस यहां क्या कह रहा है, "फिर यह स्पष्ट रूप से इंगित करने के बाद कि भगवान को अपने प्राणियों के बलिदान की कोई आवश्यकता नहीं है, पैगंबर यह घोषणा करते हैं कि आज्ञाकारिता सिनैटिक विधान का वास्तविक उद्देश्य और आवश्यकता थी।" होमबलि का कोई भी भाग नहीं खाया जाना चाहिए। इसलिए जब यह 21 में कहता है, "आगे बढ़ो, अपने होमबलि को अपने अन्य बलिदानों में शामिल करो और मांस स्वयं खाओ," प्रभु वास्तव में कह रहे हैं, कि जिन्होंने उन्हें उनके प्रसाद के उस हिस्से से नाराज किया, जिसे उन्होंने दावा किया है उसका अपना, इसे पूरा अपने पास रखने के लिए स्वागत है। वह उस प्रकार का बलिदान नहीं चाहता या उसकी आवश्यकता नहीं है। इसलिए आगे बढ़ो, अपने अन्य बलिदानों में अपने होमबलि भी मिलाओ, और उनका मांस तुम ही खाओ; क्योंकि जब मैं तुम्हारे पुरखाओं को मिस्र से निकाल लाया, और उन से बातें की, तब मैं ने उन्हें आज्ञा नहीं दी।

एनआईवी कहता है "होमबलि के बारे में।" लेकिन आप देखिए कि एलिस का अनुवाद क्या करता है। किंग जेम्स कहते हैं "संबंधित" और एनआईवी कहते हैं "के बारे में", लेकिन यह 'अल पूर्वसर्ग है, आप वहां हिब्रू पाठ को देखते हैं, ' अल। आप उस 'अल' का अनुवाद कैसे करते हैं? क्या यह "के बारे में" या "संबंधित" है जैसा कि एनआईवी और किंग जेम्स कहते हैं? एलिस कहते हैं "नहीं;" यह "की वजह से" या "की खातिर" होना चाहिए। दूसरे शब्दों में, "जब मैं तुम्हारे पुरखाओं को मिस्र से निकाल लाया, और उन से बातें की, तब मैं ने उन्हें होमबलि और मेलबलि के लिये आज्ञा नहीं दी," क्योंकि मुझे उनकी आवश्यकता नहीं। आप इन्हें अपने पास रख सकते हैं। मुझे लगता है कि यह सुझाव श्लोक 21 के साथ बेहतर फिट बैठता है। "आगे बढ़ो, अपने होमबलि को अपने अन्य बलिदानों में शामिल करो और मांस स्वयं खाओ," मुझे आपके बलिदानों की आवश्यकता नहीं है। मैं जो चाहता हूं वह आपकी आज्ञाकारिता है। तो, फिर से, मुझे लगता है कि यिर्मयाह जो कर रहा है

वह यह नहीं कह रहा है कि बलिदान कुछ ऐसा है जिसका भगवान मूल रूप से विरोध करते हैं। यह वह तरीका है जिससे इस्राएली बलिदान ला रहे थे जिसका यहोवा विरोध कर रहा था।

3. धर्म में कर्मकाण्ड का स्थान

संभवतः ईसाई धर्म प्रचारक समुदाय में यह कोई मुद्दा नहीं है, कोई प्रश्न नहीं है जिसे लोग संबोधित कर रहे हैं। आप एक विश्वविद्यालय परिसर में जाते हैं जहां छात्र "साहित्य के रूप में बाइबिल" पर एक पाठ्यक्रम लेते हैं, यह उस प्रकार की सामग्री है जिसके बारे में वे बात करेंगे। यह इन सभी पाठ्यपुस्तकों में है जिनका उपयोग पुराने नियम के उस प्रकार के उपचार में किया जाता है। इसलिए, मुझे यकीन है कि वहाँ बहुत सारे लोग हैं जो सोचते हैं कि यह इस प्रकार के विचारों का विरोध है। यदि और कुछ नहीं तो यह हमारा ध्यान इस प्रश्न की ओर आकर्षित करता है कि भविष्यवक्ता इज़राइल से उनकी अनुष्ठानिक आज्ञाकारिता के बारे में इतनी दृढ़ता से क्यों बात करते हैं। क्योंकि तब यह प्रश्न उठता है कि पूजा में कर्मकाण्ड का क्या स्थान है? यह आज भी निरंतर चलने वाला मुद्दा है। हमारी पूजा में अनुष्ठान का क्या स्थान है? विभिन्न रूपों में आप आज अनुष्ठान के उसी प्रकार के दुरुपयोग में पड़ सकते हैं जैसे पुराने नियम के काल में इस्राएलियों ने किया था। आप सोचते हैं कि केवल चर्च में जाकर, कुछ पंथों का पाठ करके, कुछ विशेष प्रार्थनाएँ करके, आप ईश्वर की कृपा प्राप्त कर लेते हैं। यदि आपका जीवन इस बात का प्रमाण नहीं दे रहा है कि आप उस तरह से जीने के इच्छुक हैं जिस तरह प्रभु चाहते हैं कि आप जियें। अनुष्ठान स्वचालित रूप से भगवान का आशीर्वाद और लाभ नहीं लाते हैं। इसका मतलब यह नहीं है कि वे महत्वहीन हैं और हमें उन्हें किनारे कर देना चाहिए, क्योंकि उनका उपयोग वास्तविक है।

बी. भविष्यवक्ता सांस्कृतिक कार्यकर्ता थे

1. दृष्टिकोण एल एट की व्याख्या बी पर आगे बढ़ती है, इस स्थिति का दूसरा चरम, यानी, "पैगंबर सांस्कृतिक कार्यकर्ता थे।" 1. उसके अंतर्गत है, "दृष्टिकोण की व्याख्या।" मैं कहूंगा कि आज 30 या 40 साल पहले की तुलना में अधिक मान्यता है कि पैगंबर मूल रूप से पंथ के विरोधी नहीं थे, लेकिन पेंडुलम घूम गया है। पिछले लगभग 50 वर्षों में पुराने नियम के विद्वानों के एक निश्चित वर्ग के बीच

पैगम्बर और पंथ को इतनी निकटता से जोड़ने के लिए एक आंदोलन चला है कि पैगम्बरों के साथ-साथ पुजारियों को भी आधिकारिक पंथ पदाधिकारियों के रूप में देखा जाए।

एक। ऑडब्रे आर. जॉनसन वकालत करते हैं

इस दृष्टिकोण के समर्थकों में से एक, जिनके काम का अंग्रेजी में अनुवाद किया गया है, ऑब्रे आर. जॉनसन हैं। यदि आप पृष्ठ 12 के निचले भाग को देखें, तो आपको उनके खंड *द कल्टिक प्रोफेट इन एंशिअंट इज़राइल से उद्धारण* मिलेंगे, वे कहते हैं, “परिणामस्वरूप पैगंबर की भूमिका के मध्यस्थ कार्यों को कमोबेश नजरअंदाज कर दिया गया है। फिर भी यह निस्संदेह सच है कि *नबीया* पैगंबर, एक पेशेवर व्यक्ति के रूप में, यहोवा के प्रवक्ता के समान ही लोगों के प्रतिनिधि थे; प्रार्थना करने के साथ-साथ दैवीय प्रतिक्रिया या दैवज्ञ देना उनके कार्य का हिस्सा था। ऐसी स्थिति में, यह प्रश्न फिर उठता है कि वास्तव में इन सलाहकार विशेषज्ञों की स्थिति क्या थी। क्या प्रारंभिक भविष्यवक्ताओं की तरह, उनकी भी पंथ के भीतर पुरोहित के समान स्थिति थी? विशेष रूप से, क्या हमें यरूशलेम के भविष्यवक्ताओं को मंदिर कर्मियों के सदस्य के रूप में सोचना चाहिए?” बेशक यह एक सवाल है, लेकिन उनका निष्कर्ष “हाँ” है।

बी। सिगमंड मोविन्केल और सांस्कृतिक पैगंबर

भविष्यवक्ताओं को पंथ के हिस्से के रूप में इस अर्थ में शामिल करने की दिशा में बहुत अधिक आंदोलन हुआ है कि वे सांस्कृतिक पदाधिकारी थे, जो सिगमंड मोविन्केल के नाम से नॉर्वेजियन पुराने नियम के विद्वान के प्रभाव से आता है। आप उसका नाम अपनी ग्रंथ सूची में पाएंगे। उन्होंने भजनों पर कई खंड प्रकाशित किए, और उनमें से एक खंड में, उन्होंने तर्क दिया कि भजनों में, भगवान कभी-कभी सीधे बोलते हैं। उदाहरण के लिए, भजन 75:2 और निम्नलिखित कहता है, “हे परमेश्वर, हम तेरा धन्यवाद करते हैं, हम धन्यवाद करते हैं, क्योंकि तेरा नाम निकट है; मनुष्य तेरे आश्चर्यकर्मों का वर्णन करते हैं। तुम कहते हो, 'मैं नियत समय चुनता हूँ; मैं ही सीधा न्याय करता हूँ। जब पृथ्वी और उसके सभी लोग कांपते हैं, तो मैं ही उसके खंभों को मजबूती से थामता हूँ।” आप वहां पहली कविता में देखते हैं, भगवान भविष्यवाणी बोलने के रूप में बहुत कुछ बोल रहे हैं। मोविन्केल ने इस प्रकार के उदाहरणों से तर्क दिया कि आपको इनमें से कई भजनों में एक

भविष्यसूचक भाषण की शैली अंतर्निहित मिलती है। इससे उन्होंने निष्कर्ष निकाला कि अधिकांश भजन पंथ में उत्पन्न हुए थे और भजन के कई हिस्सों के शब्द भविष्यवक्ताओं द्वारा बोले गए थे जो सांस्कृतिक अनुष्ठानों से जुड़े थे। उन्होंने उन्हें "पंथ पैगंबर" कहा। इसलिए प्रथम व्यक्ति एकवचन को उन्होंने भविष्यवक्ता की एक अलौकिक प्रतिक्रिया के रूप में माना जो एकत्रित होने पर पूजा करने वाले लोगों के लिए ईश्वर का वचन ला रहा था। इसलिए पुजारी के अलावा, जो मंदिर में प्रसाद लाता था, आपके पास एक व्यक्ति था जिसने वहां एक भविष्यवाणी दी थी। उन्होंने ईश्वर के वचन को धार्मिक पूजा के संदर्भ में लाया। तो, उनका निष्कर्ष यह था कि भविष्यवक्ता और पुजारी मंदिर सेवा, या विभिन्न अन्य अभयारण्यों में पूजा के दो अलग-अलग कार्यालय थे। कभी-कभी वे एक व्यक्ति में एकजुट हो सकते हैं - ईजेकील एक पैगंबर और एक पुजारी थे - लेकिन आम तौर पर, उन्हें लगता था कि वे दो अलग-अलग व्यक्ति थे, दोनों सांस्कृतिक पदाधिकारी थे।

2. शास्त्रीय समर्थन कमजोर है

आप पूछ सकते हैं, "इसके लिए शास्त्रीय समर्थन कहाँ है?" इन लोगों के लेखन में सिद्धांत के लिए प्रत्यक्ष शास्त्रीय समर्थन बहुत कम है। कुछ लोगों का तर्क है कि सैमुअल शीलो के तम्बू से जुड़ा था। वह रामा में बलिदान स्थल से जुड़ा हुआ था। आपके पास पैगम्बरों और पुजारियों का एक साथ उल्लेख किये जाने के बिखरे हुए सन्दर्भ हैं। उदाहरण के लिए, यशायाह 28:7 जहां आपको यह कथन मिलता है, "याजक और भविष्यद्वक्ता शराब से लड़खड़ाते हैं और शराब से भ्रमित हो जाते हैं।" इसलिए पुजारियों और पैगंबरों का उल्लेख एक ही वाक्य में किया जाता है जैसे कि वे किसी तरह एक-दूसरे से जुड़े हुए हों। यिर्मयाह 4:9, आपके पास एक समान संदर्भ है "प्रभु की वाणी है, 'उस दिन, राजा और हाकिम हतोत्साहित हो जाएंगे, याजक भयभीत हो जाएंगे, और भविष्यद्वक्ता भयभीत हो जाएंगे।" इसमें याजकों की सूची है और भविष्यवक्ता एक साथ। आपके पास एलिय्याह कार्मेल पर्वत पर बलि अनुष्ठानों या समारोहों से जुड़ा हुआ है, जब वह बाल के पुजारियों का सामना करता है। उदाहरण के लिए, आपके पास मंदिर में प्रकट होने वाले भविष्यवक्ता हैं, यिर्मयाह। यिर्मयाह अध्याय 7 की पुस्तक में वह मंदिर के दरबार में है। देखिये ये सभी अप्रत्यक्ष प्रकार के सन्दर्भ हैं। सिद्धांत को आधार बनाने के लिए बहुत कम स्पष्ट साक्ष्य हैं।

सी. यह दृष्टिकोण कि भविष्यवक्ता न तो पंथ-विरोधी थे, न ही पंथ-कार्यकर्ता, बल्कि केवल दैवीय रहस्योद्घाटन के उद्घोषक थे

आइये 3., "दृष्टिकोण का आकलन" पर चलते हैं। यदि आप *न्यू बाइबल डिक्शनरी* में भविष्यवाणी पर लेख देखें, तो जे. मोटयेर लिखते हैं, "पंथ पैगंबर की स्थिति का आधार काफी हद तक अनुमानात्मक है। यह देखना मुश्किल है कि कोई भी सिद्धांत कैसे स्थिर हो सकता है जब वह इतनी मामूली नींव पर टिका हो।" मुझे लगता है कि वह सही हैं कि ऐसे बहुत कम प्रत्यक्ष प्रमाण हैं जो इस निष्कर्ष का समर्थन करते हों कि भविष्यवक्ता सांस्कृतिक पदाधिकारी थे। ईजे यंग ने अपने खंड *माई सर्वेंट्स द प्रोफेट्स* में कहा है, "हम भविष्यवक्ताओं और मंदिर के बीच सटीक संबंध के सवाल को अनुत्तरित छोड़ देंगे। हमें नहीं लगता कि धर्मग्रंथ में इस मामले पर निश्चितता के साथ कुछ कहने के लिए पर्याप्त सबूत दिए गए हैं।" जॉनसन का मोनोग्राफ, जिसे हमने *प्राचीन इज़राइल में पंथ पैगंबर पर देखा* था, वेलहाउजेन के स्कूलों के तहत प्रचलित दृष्टिकोणों के लिए एक संपूर्ण सुधारात्मक के रूप में कार्य करता है जो कि पंथ-विरोधी होगा। तो यह उसमें सुधारात्मक है। इससे हमें यह देखने को मिलता है कि वास्तव में भविष्यवक्ताओं और बलिदान के स्थान के बीच कुछ संबंध था। हालाँकि, यह संबंध क्या था, हम अपनी ओर से यह कहने में असमर्थ हैं। हम जॉनसन के इस तर्क का पालन करने में असमर्थ हैं कि भविष्यवक्ता सांस्कृतिक विशेषज्ञ थे। मुझे लगता है कि मोटयेर की बात सही है क्योंकि यह काफी हद तक ठोस सबूतों पर आधारित है।

तो चलिए सी. पर चलते हैं, "यह दृष्टिकोण कि भविष्यवक्ता न तो पंथ-विरोधी थे, न ही पंथ-कार्यकर्ता, बल्कि केवल दैवीय रहस्योद्घाटन के उद्घोषक थे।" मुझे ऐसा लगता है कि अंतिम बात यही है। हमने शुरू से ही बात की है कि भविष्यवाणी का कार्य ईश्वरीय आह्वान पर आधारित है। ईश्वर एक पुजारी को भविष्यवक्ता के रूप में कार्य करने के लिए बुला सकता है। ईजेकील इसका एक उदाहरण था। वह एक किसान को एलीशा और आमोस की तरह बुला सकता था। वह जो कोई भी था, उस व्यक्ति को परमेश्वर ने अपने वचन का प्रचार करने के लिए बुलाया था; परमेश्वर ने अपना वचन उनके मुँह में डाला और उन्होंने परमेश्वर के लोगों को परमेश्वर का सन्देश दिया। मुझे ऐसा लगता है कि जब आप पूरे पुराने नियम और भविष्यवक्ताओं के लेखन को देखते हैं, तो निष्कर्ष यह है: न तो भविष्यवक्ता पंथ के खिलाफ थे, न ही पेशेवर सांस्कृतिक अधिकारी। इनमें से किसी भी

स्थिति के लिए हमारे पास बहुत कम सबूत हैं। कभी-कभी भविष्यवक्ताओं ने पंथ की निंदा की, लेकिन उन्होंने ऐसा तब किया जब यह अपने इच्छित उद्देश्य से भटक गया; वे बुनियादी तौर पर इसके विरोधी नहीं थे। मुझे लगता है कि भविष्यवक्ताओं ने जिसे प्रचारित किया वह था जिसे मैं अपने पूरे दिल, दिमाग और आत्मा से भगवान से प्यार करने के लिए दिल के आंतरिक स्वभाव की "संविदात्मक एकता" कहूंगा, और उस प्यार की नैतिक और नैतिक ईमानदारी दोनों में बाहरी अभिव्यक्ति होगी। न्याय करना, अपने पड़ोसी से प्यार करना, वगैरह-वगैरह, साथ ही दैवीय निर्धारित मानकों के अनुसार पूजा करना। तो आपको उन सभी घटकों की आवश्यकता है, आप केवल अनुष्ठानों से न गुजरें और भगवान का अनुग्रह प्राप्त करने की उम्मीद न करें। उन अनुष्ठानों को भगवान के प्रति प्रेम और भगवान के उद्देश्यों के लिए जीने की इच्छा के साथ जोड़ा जाना चाहिए। यह नैतिकता और अनुष्ठान पालन दोनों द्वारा किया जाता है।

सांस्कृतिक कृत्यों का अपने आप में कोई मूल्य नहीं है। मुझे लगता है कि यह कुछ ऐसा है जो भविष्यवक्ता प्राचीन इज़राइल को बता रहे हैं, यह कुछ ऐसा है जो वे हमें भी बता सकते हैं। सांस्कृतिक कृत्य तभी सार्थक होते हैं जब उन्हें ईश्वर के प्रति अविभाजित प्रेम और उनके मार्ग पर चलने की इच्छा की अभिव्यक्ति के रूप में किया जाता है। जब कोई व्यक्ति ईश्वर से प्रेम करता है और उसके मार्गों पर चलने की इच्छा रखता है, तो वह कर्मकांडों में व्यक्त होता है। लेकिन ईश्वर के प्रति प्रेम और उनके मार्गों पर चलने की इच्छा से अलग अनुष्ठान कार्य प्रभु के लिए घृणास्पद हैं। मुझे लगता है कि भविष्यवक्ता यही कह रहे हैं जब वे इसराइल में जो कुछ भी हो रहा है उसकी निंदा करते हैं, जो कि चढ़ावे को जलाने के गुणन के संबंध में हो रहा है, लेकिन ऐसे जीवन जी रहे हैं जो पूरी तरह से भगवान की इच्छाओं के विपरीत थे।

आठवीं. भविष्यवाणी पुस्तकों की रचना - क्या भविष्यवक्ता लेखक थे?

हम आगे बढ़ते हैं. रोमन अंक आठवीं. है, "भविष्यवाणी की पुस्तकों की संरचना—क्या भविष्यवक्ता लेखक थे?" 3 या 4 उप-बिंदु हैं. ए. है, "पारंपरिक दृश्य।" बी. है, "लिटरेरी क्रिटिकल स्कूल।" सी. है, "इतिहास और पारंपरिक स्कूल, वह मौखिक परंपरा स्कूल है।"

ए. पारंपरिक दृष्टिकोण

लेखन को भविष्यवक्ता इसलिए कहा जाता है क्योंकि वे अपना संदेश लिखित रूप में देते हैं ताकि इसे स्थायी रूप में संरक्षित किया जा सके। उस दृष्टिकोण के अनुसार भविष्यवक्ता लेखक थे। शायद यिर्मयाह 36:1-28 और यशायाह 30 पद 8 जैसे अनुच्छेद उस पद्धति पर कुछ प्रकाश डाल सकते हैं जिसमें चीजें लिखी गई थीं।

1. यिर्मयाह 36:1-28

यिर्मयाह 36:1-28 काफी दिलचस्प है। आइए उस पर नजर डालें। यह किसी भविष्यसूचक संदेश को लिखित रूप में रखने का सबसे स्पष्ट वर्णन है। आपने पढ़ा “यहूदा के राजा यहोयाकीम के चौथे वर्ष में, यहोवा की ओर से यह वचन यिर्मयाह के पास पहुंचा: 'एक पुस्तक ले और उस पर वे सभी वचन लिख, जो मैंने इस्राएल, यहूदा और उस समय के अन्य सभी राष्ट्रों के विषय में तुमसे कहे हैं। मैं ने योशियाह के राज्यकाल से अब तक तुम से बातें करना आरम्भ किया। कदाचित्त जब यहूदा के लोग उस हर विपत्ति के विषय में सुनेंगे जो मैं उन पर डालने की योजना बना रहा हूं, तो उनमें से हर एक अपनी दुष्ट चाल से फिर जाएगा; तब मैं उनकी दुष्टता और उनका पाप क्षमा करूंगा।” इसलिए यहोवा ने यिर्मयाह से कहा कि वह एक शास्त्री से यह सन्देश लिखवा ले।

तो यिर्मयाह क्या कर रहा है? श्लोक 4, उसने “नेरिय्याह के पुत्र बारूक को बुलाया, और जब यहोवा ने यिर्मयाह से सब वचन कहे थे, तब बारूक ने उन्हें पुस्तक पर लिखा।” तब उस पुस्तक को दरबार में ले जाया गया और राजा को पढ़कर सुनाया गया। राजा ने क्या किया? आप श्लोक 21 में पढ़ते हैं, “राजा ने यहूदी को पुस्तक लाने के लिए भेजा, और यहूदी ने उसे एलीशामा सचिव के कमरे से लाया और उसे राजा और उसके पास खड़े सभी अधिकारियों को पढ़कर सुनाया। यह नौवां महीना था और राजा शीतकालीन भवन में बैठा था, उसके सामने अंगीठी में आग जल रही थी। जब भी यहूदी ने पुस्तक के तीन या चार स्तम्भ पढ़े, राजा ने उन्हें एक मुंशी के चाकू से काट दिया और उन्हें आग के बर्तन में फेंक दिया, जब तक कि पूरी पुस्तक आग में जल न गई। आयत 26 में आपने पढ़ा, “राजा ने राजा के पुत्र यरहमील, अज़्रीएल के पुत्र सरायाह और अब्देल के पुत्र शेलेम्याह को बारूक मंत्री और यिर्मयाह भविष्यवक्ता को गिरफ्तार करने की आज्ञा दी। परन्तु

यहोवा ने उन्हें छिपा रखा था," इसलिये वे गिरफ्तार नहीं किये गये।

“ जब राजा ने उस पुस्तक को जला दिया जिसमें वे शब्द थे जो बारूक ने यिर्मयाह के कहने पर लिखे थे, तब यहोवा का वचन यिर्मयाह के पास पहुंचा: 'एक और पुस्तक ले और उस पर वे सभी शब्द लिख दे जो पहली पुस्तक में थे, जिसे यहूदा के राजा यहोयाकीम ने लिखा था। जल गया। यहूदा के राजा यहोयाकीम से यह भी कह, यहोवा यों कहता है, कि तू ने उस पुस्तक को जलाकर यह कहा, कि तू ने उस पर यह क्यों लिखा, कि बाबुल का राजा निश्चय आकर इस देश को नाश करेगा, और मनुष्य और पशु दोनों को इस में से नाश करेगा। ?'” इसलिये, यहूदा के राजा यहोयाकीम के विषय में यहोवा यह कहता है: 'उसके पास दाऊद की गद्दी पर बैठनेवाला कोई न होगा; उसके शरीर को बाहर फेंक दिया जाएगा और उजागर कर दिया जाएगा।”

तो, प्रभु ने यिर्मयाह से कहा कि इस संदेश को एक पुस्तक पर रख दो और यिर्मयाह संदेश लिखता है और मुंशी इसकी प्रतिलिपि बनाता है, इसे राजा के पास भेजा जाता है, वह इसे जला देता है, फिर प्रभु उसे संदेश फिर से देता है और वह इसे फिर से लिखता है।

2. यशायाह 30:8

यशायाह 30 पद 8 एक अन्य पाठ है जिसमें लेखन का संदर्भ है, जहां यह कहा गया है, "अब जाओ, इसे उनके लिए एक पट्टिका पर लिखो, इसे एक पुस्तक पर लिखो, कि यह आने वाले दिनों के लिए एक शाश्वत गवाही हो।" तो संदेश दिया जा चुका था और प्रभु ने कहा, "इसे एक पुस्तक पर लिखो।" अब वे दो परिच्छेद संभवतः सबसे स्पष्ट परिच्छेद हैं जो "क्या भविष्यवक्ता लेखक थे?" के मुद्दे को संबोधित करते हैं। और उन्होंने उन तरीकों पर कुछ प्रकाश डाला जिनके द्वारा भविष्यसूचक पुस्तकें हमारे पास आईं। हम इन कुछ प्रकार की टिप्पणियों से अधिक कुछ नहीं जानते हैं। प्रत्येक मामले में अपनाई गई विधि को स्थापित करने के लिए बहुत अधिक आंतरिक साक्ष्य नहीं हैं, लेकिन यह स्पष्ट प्रतीत होता है कि कम से कम कुछ मामलों में, भविष्यवक्ताओं ने स्वयं संदेश लिखे, शायद दूसरों ने संदेश को हटा दिया और यदि यह मौखिक रूप से दिया गया था तो संदेश को संरक्षित किया, लेकिन ऐसा प्रतीत होता है कि भविष्यवक्ता लेखक थे, केवल वक्ता नहीं। हम स्पष्ट रूप से नहीं जानते हैं कि क्या हर मामले में, पैगंबर ने खुद वह सामग्री लिखी थी जो

उस पुस्तक में शामिल थी जिसमें उनका नाम लिखा था, चाहे वह शास्त्रियों द्वारा लिखा गया था या संपादित किया गया था और किसी और के द्वारा एक साथ रखा गया था। लेकिन पारंपरिक दृष्टिकोण यह है कि भविष्यवक्ता लेखक थे।

बी। द लिटरेरी क्रिटिकल स्कूल

बी. है, "द लिटरेरी क्रिटिकल स्कूल।" साहित्यिक आलोचनात्मक विचारधारा में भविष्यवक्ताओं को लेखक के रूप में भी देखा जाता था। हालाँकि, साहित्यिक आलोचकों ने जो बड़ा काम अपने सामने रखा वह यह था कि जो मूल था उसे बाद में जोड़े गए से अलग करना। इसलिए, उन्होंने यह निर्धारित करने के लिए बाद के समय की द्वितीयक अभिवृद्धि से मूल को अलग करने की कोशिश की कि क्या प्रामाणिक और सत्य था, जिसका श्रेय उस भविष्यवक्ता को दिया जा सकता है जिसका नाम किताब में दिया गया था, इसकी तुलना में जो बाद में जोड़ा गया था। बहुत जल्दी, वास्तविक भविष्यवाणियों को बाहर करने वाले तर्कसंगत विचारों ने भूमिका निभानी शुरू कर दी। आपको भविष्यसूचक कथन मिलते हैं, विशेष रूप से यशायाह के बारे में, साइरस के बारे में बात करते हुए, यह संभव नहीं था और यह किसी और से आया होगा, यशायाह भविष्यवक्ता से नहीं। इसके कई उदाहरण हैं।

तो साहित्यिक आलोचनात्मक स्कूल के तहत मैं जो करना चाहता हूँ वह उन दो पुस्तकों के बारे में बोलना है जिन पर विशेष रूप से हमला किया जा रहा है क्योंकि ये उस पैगंबर के शब्द नहीं हैं जिनका नाम पुस्तक में है। वे दो पुस्तकें यशायाह और डैनियल हैं।

इतना नहीं यशायाह 1-39, कहाँ और यहाँ बहुत भिन्नता है। यहाँ तक कि आलोचनात्मक विद्वानों के बीच भी आहाज और हिजकिय्याह के समय में यशायाह भविष्यवक्ता को कम से कम 1-39 का श्रेय देने की सामान्य इच्छा है। लेकिन जब आप अध्याय 40-66 पर आते हैं, तो एक व्यापक आम सहमति है कि यशायाह नहीं बोल रहा है, बल्कि बेबीलोन की कैद के अंत में साइरस के समय में दूसरा यशायाह बोल रहा है। डैनियल के साथ भी ऐसी ही हरकतें की गईं। तो आइए लिटरेरी क्रिटिकल स्कूल के अंतर्गत यशायाह और डैनियल को देखें।

1. यशायाह 40-66 - या "दूसरा यशायाह"

मुख्यधारा के साहित्यिक आलोचकों द्वारा अक्सर यह दावा किया जाता है कि यशायाह, यशायाह की पुस्तक के अध्याय 40-66 के लेखक नहीं हैं। समकालीन बाइबिल अध्ययन की मुख्यधारा में आगे बढ़ने वाले विद्वानों द्वारा इसे आमतौर पर ड्यूटेरो -इसैया के रूप में संदर्भित किया जाता है। आप इसे टिप्पणियों के शीर्षकों में पाएंगे। आप इसे मुख्यधारा की टिप्पणियों में पाएंगे, यशायाह पर एक टिप्पणी और ड्यूटेरो -इसैया पर एक टिप्पणी। आपको एक खंड यशायाह 1-39 पर, दूसरा खंड अध्याय 40 और उसके बाद मिलता है।

1. राचेल मार्गलियोथ

आप अपने उद्धरणों को देखें, पृष्ठ 14, यशायाह पर एक महिला राचेल मार्गलियोथ, एक यहूदी विद्वान द्वारा एक बहुत ही दिलचस्प अध्ययन है, जो यशायाह की पुस्तक की एकता के लिए बहस कर रही है। ध्यान दें कि वह पृष्ठ के शीर्ष पर क्या कहती है, "यह धारणा कि यशायाह की पुस्तक एक लेखक का काम नहीं है, लेकिन अध्याय 40 से 66 एक गुमनाम भविष्यवक्ता का है जो सियोन की वापसी के दौरान रहता था, इसे माना जाता है बाइबिल आलोचना की सबसे महत्वपूर्ण उपलब्धियों में से एक। यह निर्णय विद्वानों के दायरे से आगे निकल गया है और आम तौर पर सभी वर्गों द्वारा स्वीकार कर लिया गया है, और बाइबिल स्कूली शिक्षा का हिस्सा बन गया है। कोई शायद ही ऐसे प्रबुद्ध व्यक्ति से मिलता है जो इसे निर्विवाद सत्य के रूप में स्वीकार नहीं करता है।

दिलचस्प बयान. "पुस्तक का विभाजन सबसे पहले डोएडरलीन (1775) के क्रिटिकल स्कूल द्वारा व्यक्त किया गया था। उनकी प्रणाली को ईसाई आलोचकों द्वारा विकसित और विस्तारित किया गया था", और उनके पास उनमें से एक पूरा मेजबान है। "कई यहूदी विद्वानों ने उनका अनुसरण किया," इनमें से क्रॉस और उनकी "यशायाह पर वैज्ञानिक टिप्पणी" का उल्लेख है। "आधुनिक टिप्पणीकारों के बीच यह एक स्वीकृत तथ्य है कि अध्याय 40 से अंत तक यशायाह द्वारा नहीं लिखा गया है।" वह आगे कहते हैं: 'हमारे ज्ञान की वर्तमान स्थिति के अनुसार, इन अध्यायों की प्रामाणिकता को साबित करने का प्रयास करना किसी की ओर से एक निरर्थक प्रयास होगा, क्योंकि

यह आंतरिक साक्ष्य से पता चलता है कि उन्हें सच्चे यशायाह के लिए जिम्मेदार नहीं ठहराया जा सकता है। "अब यह एक विशिष्ट प्रकार का कथन है जो आपको साहित्य में मिलता है।

2. आरएन व्हायब्रे

उन्होंने वह पुस्तक 1964 में लिखी थी, यदि आप इसके बारे में हाल ही में चर्चा करते हैं, तो आरएन व्हायब्रे, *द सेकेंड इसैयाह के अंतर्गत पृष्ठ 15 ए देखें*। मुझे नहीं पता कि आप ओल्ड टेस्टामेंट गाइड्स नामक खंडों की उस श्रृंखला से अवगत हैं या नहीं। वे छोटी किताबें हैं, आमतौर पर अधिकतम एक सौ पचास पृष्ठ, और पुराने नियम की प्रत्येक पुस्तक के लिए एक है। यह जो करता है वह आपको लेखकत्व, तिथि से परिचित कराता है, यह काफी हद तक फ्रीमैन की तरह है, प्रत्येक विहित पुस्तक पर प्रमुख व्याख्यात्मक मुद्दों, लेखकत्व, तिथि और ऐतिहासिक पृष्ठभूमि के महत्वपूर्ण विश्लेषण के साथ एक पुस्तक को छोड़कर। जब आप पुराने नियम की श्रृंखला में यशायाह के पास आते हैं, तो यशायाह के लिए सिर्फ एक खंड नहीं है, देखिए यशायाह के लिए एक खंड है, और फिर अध्याय 40 से 66 के लिए यह खंड, दूसरा यशायाह है। व्हायब्रे यह कहते हुए लिखते हैं, " यह खंड, न्यू सेंचुरी बाइबिल में यशायाह 40-66 पर मेरी टिप्पणी की तरह, मेरे दो मोनोग्राफ... यशायाह की पुस्तक के दूसरे भाग के साथ निरंतर व्यस्तता का परिणाम हैं क्योंकि मैंने पहली बार 1965 में इस पर व्याख्यान तैयार किया था। मेरा मानना है कि जो दृष्टिकोण है कई वर्षों से यह लगभग सार्वभौमिक रूप से माना जाता रहा है कि अध्याय 40 से 55 मूलतः एक ही अज्ञात 'निर्वासन के पैगम्बर' का काम है, जो वैध है और अधिकांश विद्वानों का दृष्टिकोण बने रहने की संभावना है। तो, जब आप पूछते हैं कि यशायाह 40 से 66 का लेखक कौन था? यह एक अज्ञात भविष्यवक्ता है, जो निर्वासन के समय जीवित था। हम नहीं जानते कि वह कौन था। इस बात पर लगभग आम सहमति है कि यशायाह ने स्वयं पुस्तक का दूसरा भाग नहीं लिखा है।

3. दूसरे यशायाह तर्क का आधार

अब, इस तरह के निष्कर्ष पर पहुंचने का आधार क्या है? जब आप उन तर्कों को देखते हैं जो आप उन लोगों में पाते हैं जो इस ड्यूटेरो -यशायाह दृष्टिकोण की वकालत करते हैं, तो आमतौर

पर जो आधार दिए जाते हैं वे मूल रूप से तीन तर्क होते हैं। मैंने इसके सार को तीन मूलभूत तर्कों तक सीमित करने का प्रयास किया है।

एक। ऐसा कहा जाता है कि यशायाह 40 से 66 में पाई गई अवधारणाएँ और विचार ईसा से काफी भिन्न हैं। 1-39

ए. "कहा जाता है कि यशायाह 40 से 66 में पाई गई अवधारणाएँ और विचार उन अवधारणाओं और विचारों से काफी भिन्न हैं जो पुस्तक के पहले भाग के निर्विरोध खंडों में दिखाई देते हैं," यानी, पुस्तक का पहला भाग यशायाह को बताया गया है। दूसरे शब्दों में, वहाँ कुछ बचाव है, क्योंकि कुछ विद्वान कहेंगे कि प्रथम यशायाह का सब कुछ यशायाह का नहीं है, ऐसा प्रतीत होता है कि वहाँ कुछ गौण सामग्री है। लेकिन सामान्य तौर पर, तर्क यह है कि यदि आप यशायाह 1-39 में प्रस्तुत अवधारणाओं और विचारों को देखते हैं, और उनकी तुलना 40-66 में पाए गए अवधारणाओं और विचारों से करते हैं, तो अवधारणाओं और विचारों में पर्याप्त महत्वपूर्ण अंतर है। अवधारणाओं और विचारों में अंतर के कारण यह निष्कर्ष निकलता है कि यह किसी एक लेखक का काम नहीं है। हम वापस आएंगे और इन तर्कों की प्रतिक्रियाओं को देखेंगे और एक मिनट में तर्कों को थोड़ा और पूर्ण रूप से भर देंगे।

बी। यशायाह की पुस्तक के दो भागों के बीच भाषा और शैली में ध्यान देने योग्य अंतर दूसरे तर्क में आरोप लगाया गया है कि पुस्तक के दोनों भागों के बीच भाषा और शैली में उल्लेखनीय अंतर है। शब्दों के प्रयोग, व्याकरणिक निर्माण, इस तरह की चीज़ों को देखते हुए यह और अधिक तकनीकी हो जाता है। इससे वे यह तर्क देने का प्रयास करते हैं कि इस पुस्तक के दो भाग एक ही व्यक्ति द्वारा नहीं लिखे जा सकते, क्योंकि इसकी भाषा और शैली अलग-अलग है।

सी। अध्याय 40-66 की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि यशायाह के समय की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि नहीं है

तीसरा तर्क कहता है कि अध्याय 40-66 की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि यशायाह के समय की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि नहीं है। यशायाह आहाज के समय में और हिजकिय्याह मनश्शे के समय तक जीवित रहा। अध्याय 40-66 में यरूशलेम और मंदिर को नष्ट कर दिया गया है, लोग बेबीलोन में

निर्वासन में हैं और वे इस फ़ारसी शासक, साइरस के माध्यम से निर्वासन से मुक्त होने वाले हैं, जिसका उल्लेख नाम से किया गया था। तो निष्कर्ष यह है कि जब तक यह लिखा गया तब तक साइरस विश्व परिदृश्य पर पहले ही आ चुके होंगे। लेकिन इस दृष्टिकोण को अपनाने वाले अधिकांश विद्वान यह तर्क देंगे कि आहाज और हिजकिय्याह के समय के भविष्यवक्ता यशायाह के समय में किसी के लिए भी साइरस का नाम जानना असंभव होगा। तो ये तीन सामान्य तर्क हैं: अवधारणाएँ और विचार, भाषा और शैली, और ऐतिहासिक पृष्ठभूमि; वे अध्याय 40-66 में पिछले अध्याय से भिन्न हैं। यदि आप उन लोगों को पढ़ते हैं जो इस पर चर्चा करते हैं और फिर वे जो कहते हैं उसका विश्लेषण करते हैं, जहां तक ड्यूटेरो-यशायाह के समर्थन का सवाल है, तो आप पाएंगे कि यहीं तर्क केंद्र हैं।

2. मूल्यांकन: प्रतिवाद

क) अवधारणाएँ और विचार पुस्तक के दूसरे भाग से भिन्न हैं

आइए पहले तर्क को देखें, "अवधारणाएँ और विचार पुस्तक के दूसरे भाग से लेकर पुस्तक के निर्विरोध पहले भाग तक भिन्न होते हैं।" मैं तर्क दूंगा कि यह तर्क निर्णायक नहीं है और निर्णायक नहीं हो सकता क्योंकि यह किसी व्यक्ति के निर्णय पर निर्भर करता है कि अवधारणा और विचारों में किस हद तक अंतर लेखकत्व में अंतर को इंगित करता है या आवश्यक है। मुझे लगता है कि अंततः यह दृढ़ संकल्प का व्यक्तिपरक मामला है। अवधारणाओं और विचारों में अंतर जरूरी नहीं कि इस निष्कर्ष पर पहुंचे कि एक अलग लेखक की आवश्यकता है। ध्यान दें, इस स्थिति के समर्थक यह दावा नहीं करते हैं कि पुस्तक के दो भागों के बीच अवधारणाओं और विचारों में विरोधाभास हैं। यदि विरोधाभास होते तो यह अधिक मजबूत तर्क होता, लेकिन यह तर्क नहीं है। मुझे लगता है कि यह तर्क देना कठिन है कि अवधारणाओं और विचारों में अंतर के लिए लेखकत्व में अंतर की आवश्यकता होती है। और भी अधिक जब आपने यह विचार कर लिया है कि पुस्तक, यदि आप स्वीकार करते हैं कि वह क्या होने का दावा करती है, तो वह केवल मानवीय शब्द नहीं है, बल्कि एक दिव्य शब्द है; यह दिव्य रहस्योद्घाटन है। क्या यह संभव नहीं है कि ईश्वर एक व्यक्ति, अर्थात् यशायाह के भविष्यसूचक जीवन के विभिन्न अवधियों में विभिन्न विचारों, सत्यों और

अवधारणाओं का संचार कर सके? यशायाह लम्बे समय तक जीवित रहा और सेवा करता रहा। ऐसा प्रतीत होता है कि उनका मंत्रालय लगभग 740 से 681 ईसा पूर्व यानी लगभग 60 वर्ष तक चला। अब 60 वर्षों की अवधि में क्या यह संभव है कि अवधारणाओं और विचारों में विकास हो सके? आप ऐसी आशा करेंगे. क्या इसका मतलब यह है कि आपको यह निष्कर्ष निकालना होगा कि कोई अलग लेखक है? जैसा कि मैं आगे बढ़ता हूं और यहां कहता हूं, उदाहरण के लिए, यहोवा की सेवा से संबंधित यह विशेष रहस्योद्घाटन यशायाह के जीवन के उत्तरार्ध में पहली बार क्यों नहीं दिया जाना चाहिए? अब यह एक नई अवधारणा है जो पुस्तक के दूसरे भाग में है, प्रभु का सेवक विषय एक ऐसा विषय है जो पुस्तक के पहले भाग में नहीं है जो पुस्तक के दूसरे भाग में विकसित होता है। क्या इसके लिए किसी भिन्न लेखक की आवश्यकता होगी?

पृष्ठ 13 पर एक उद्धरण है जहां ड्राइवर कहता है, उदाहरण के लिए, कि यशायाह 40 से 66 में ईश्वर की अवधारणा "बड़ी और पूर्ण" है, ये उसके शब्द हैं, क्या उसी भविष्यवक्ता के लेखन में इसे असंभव माना जा सकता है? जब ड्राइवर कहता है, "राष्ट्रों के संबंध में दैवीय उद्देश्य, विशेष रूप से इज़राइल के भविष्यवाणी मिशन के संबंध में, अधिक स्पष्ट रूप से विकसित हुआ है।" क्या इसके लिए किसी भिन्न लेखक की आवश्यकता है? या क्या यह समय के साथ विचारों में हुई प्रगति मात्र है? ड्राइवर अवधारणाओं और विचारों में अंतर को लेखकत्व में अंतर का आधार मानते हैं। हालाँकि, वह मानते हैं कि दोनों खंडों के बीच कोई आवश्यक अंतर नहीं है जब वह कहते हैं, "सच्चाई जो केवल यशायाह में पुष्टि की गई है," यह पुस्तक का पहला भाग है, "यहाँ होना प्रतिबिंब और तर्क का विषय बना दिया गया है।"

तो, मुझे ऐसा लगता है कि यह तर्क काफी हद तक उस व्यक्तिपरक निर्णय पर आधारित है। कितना अंतर है - और विशेष रूप से अंतर जो विरोधाभासी नहीं हैं, विकास दिखाते हैं, और शायद नए विचारों और विषयों का परिचय देते हैं - यह अपने आप में कितना आपको इस निष्कर्ष पर पहुंचने के लिए मजबूर करता है कि आपके पास एक अलग लेखक होना चाहिए? यह एक निर्णय कॉल है. यह कोई आवश्यक निष्कर्ष नहीं है.

वास्तव में, ए. कॉमिका ने फ्रेंच में एक अध्ययन में, दोनों वर्गों के बीच अवधारणाओं और विचारों में समझौते के आधार पर पुस्तक की एकता के लिए एक तर्क दिया। यशायाह 1-39 और

40-66 की बहुत सारी विशेषताएं हैं, जहां आपको अवधारणाओं और विचारों में सहमति मिलती है। इसलिए इस जंक्शन पर यह उतना कट्टरपंथी नहीं है जितना ऊ्यूटेरो -इसैया सिद्धांत के कुछ समर्थकों द्वारा सुझाया जा सकता है। मुझे लगता है कि बेहतर होगा कि हम यहीं रुकें और इसे पृष्ठ 3, "भाषा और शैली से तर्क" पर उठाएं, जो मुझे लगता है कि अवधारणाओं और विचारों से अधिक महत्वपूर्ण तर्क है।

डैन मॉटगोमरी द्वारा प्रतिलेखित
टेड हिल्डेब्रांट द्वारा रफ संपादित
केटी एल्स द्वारा अंतिम संपादन
टेड हिल्डेब्रांट
द्वारा पुनः सुनाया गया